1961G Contemplation versus Consumption debate

Bhog-Yoga Vivad (In Sanmati Sandesh, ca 1961)

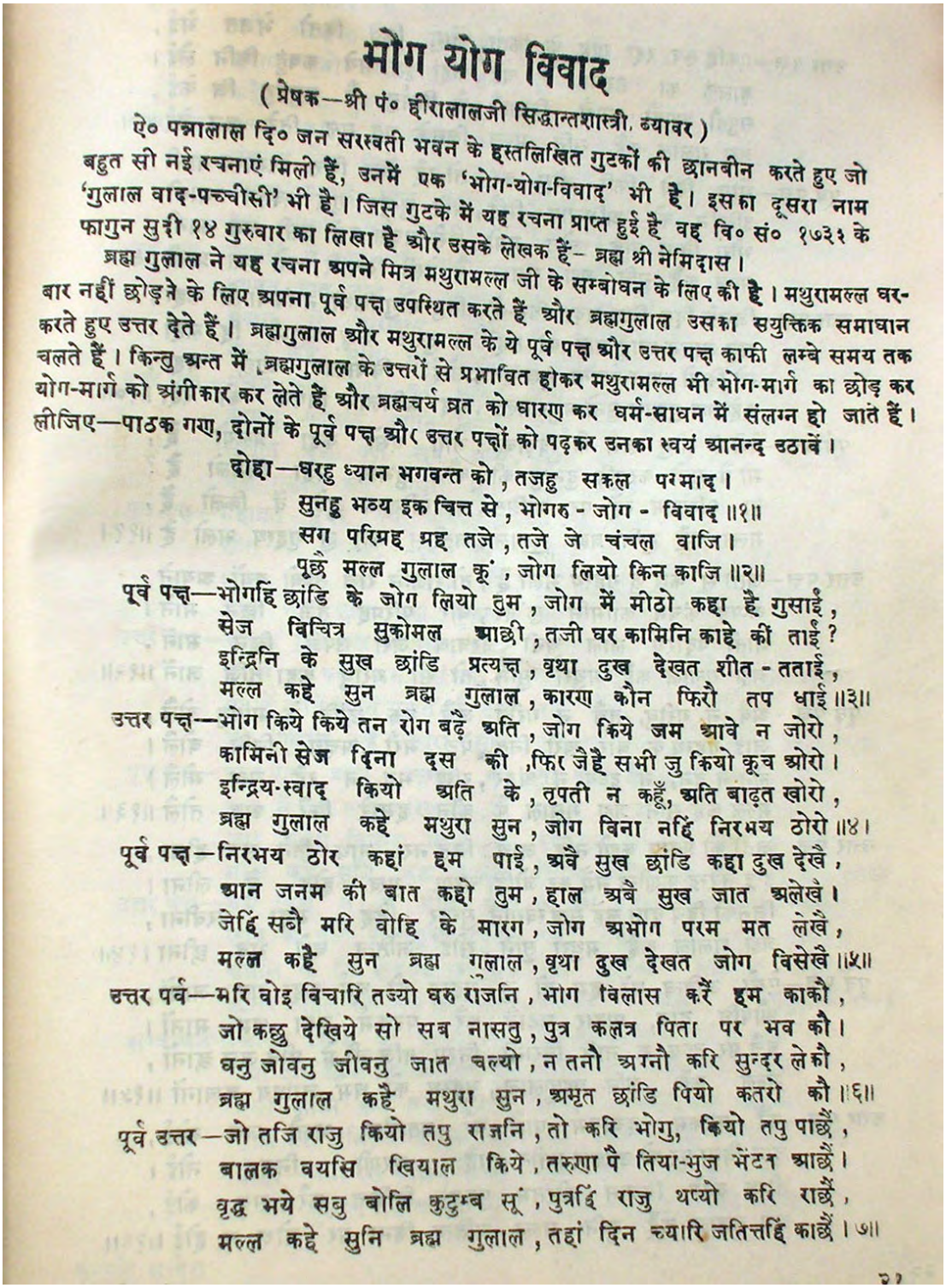

भोग योग विवाद

(प्रेषक—श्री पं० हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री, ब्यावर)

ऐ० पन्नालाल दि० जन सरस्वती भवन के हस्तलिखित गुटकों की छानबीन करते हुए जो बहुत सी नई रचनाएं मिली हैं, उनमें एक 'भोग-योग-विवाद' भी है। इसका दूसरा नाम 'गुलाल वाद-पच्चीसी' भी है। जिस गुटके में यह रचना प्राप्त हुई है वह वि० सं० १७३१ के फागुन सुदी १४ गुरुवार का लिखा है और उसके लेखक हैं- ब्रह्म श्री नेमिदास।

ब्रह्म गुलाल ने यह रचना अपने मित्र मथुरामल्ल जी के सम्बोधन के लिए की है। मथुरामल्ल घर-बार नहीं छोड़ने के लिए अपना पूर्व पक्ष उपस्थित करते हैं और ब्रह्मगुलाल उसका सयुक्तिक समाधान करते हुए उत्तर देते हैं। ब्रह्मगुलाल और मथुरामल्ल के ये पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष काफी लम्बे समय तक चलते हैं। किन्तु अन्त में ब्रह्मगुलाल के उत्तरों से प्रभावित होकर मथुरामल्ल भी भोग-मार्ग का छोड़ कर योग-मार्ग को अंगीकार कर लेते हैं और ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर धर्म-साधन में संलग्न हो जाते हैं। लीजिए—पाठक गण, दोनों के पूर्व पक्ष और उत्तर पक्षों को पढ़कर उनका स्वयं आनन्द उठावें।

दोहा—धरहु ध्यान भगवन्त को, तजहु सकल परमाद।
सुनहु भव्य इक चित्त से, भोगरु - जोग - विवाद ॥१॥
सग परिग्रह ग्रह तजे, तजे जे चंचल वाजि।
पूछै मल्ल गुलाल कूं, जोग लियो किन काजि ॥२॥

पूर्व पक्ष—भोगहिं छांडि के जोग लियो तुम, जोग में मीठो कहा है गुसाईं,
सेज विचित्र सुकोमल आछी, तजी घर कामिनि काहे की ताईं?
इन्द्रिनि के सुख छांडि प्रत्यक्ष, वृथा दुख देखत शीत - ताताई,
मल्ल कहे सुन ब्रह्म गुलाल, कारण कौन फिरौ तप धाई ॥३॥

उत्तर पक्ष—भोग किये किये तन रोग बढ़ै अति, जोग किये जम आवे न जोरो,
कामिनी सेज दिना दस की, फिर जैहै सभी जु कियो कूच ओरो।
इन्द्रिय-स्वाद कियो अति के, तृपती न कहूँ, अति बाढ़त खोरो,
ब्रह्म गुलाल कहे मथुरा सुन, जोग विना नहिं निरभय ठोरो ॥४।

पूर्व पक्ष—निरभय ठोर कहां हम पाई, अबै सुख छांडि कहा दुख देखै,
आन जनम की बात कहो तुम, हाल अबै सुख जात अलेखै।
जेहिं सबै मरि वोहि के मारग, जोग अभोग परम मत लेखै,
मल्ल कहै सुन ब्रह्म गुलाल, वृथा दुख देखत जोग विसेखै ॥५॥

उत्तर पर्व—मरि वोइ विचारि तज्यो घरु राजनि, भोग विलास करैं हम काकौ,
जो कछु देखिये सो सब नासतु, पुत्र कलत्र पिता पर भव कौ।
धनु जोवनु जीवनु जात चल्यो, न तनौ अगनौ करि सुन्दर लेकौ,
ब्रह्म गुलाल कहै मथुरा सुन, अमृत छांडि पियो कतरो कौ ॥६॥

पूर्व उत्तर—जो तजि राजु कियो तपु राजनि, तो करि भोगु, कियो तपु पाछैं,
बालक वयसि खियाल किये, तरुणा पै तिया-भुज भेंटन आछैं।
वृद्ध भये सबु बोलि कुटुम्ब सूं, पुत्रहिं राजु थप्यो करि राछैं,
मल्ल कहे सुनि ब्रह्म गुलाल, तहां दिन च्यारि जतित्तहिं काछैं। ७॥

उत्तर पक्ष—एकहिं रूप रहो गहि के कितो जोगु किये कितो भेजत भेई,
बालकु का तरुना पै चढ़ै, कहां वृद्ध भये कबहुं किनि लेई।
सपुतौ अपुतौ कुमरौ विवाहौ, कै निर्धनु कै धनुवंतु जि केई,
ब्रह्म गुलाल कहैं सुनि मल्ल, जिनके व्रतु मूल तिरे जन तेई ॥८॥

पूर्व पक्ष—भोगु किये फिरि जोगु करै, तो रहै थिर चित्त परमारथ वानी,
इन्द्रिनि को अभिलाष मिटै, मति सुन्दर शुद्ध स्वरूप प्रमानी।
भोगु विना वहि जोगु गयो, जैसे द्वादश वर्ष वसी मन कानी,
मल्ल कहै सुनि ब्रह्म गुलाल, पै ऐसी विचारि धरो व्रत प्रानी ॥९॥

उत्तर पक्ष—जिनके दिढ़ चित्त सदा थिर हैं, तिनु भोगु कियो, न कियो तो कहा,
सबु जानन स्वादु जहां को तहां, न दुराउ कछू अनुभौ हि लहा।
जो कियो ध्यान अनन्त सुखामृत, सोई विचारत आछे महा,
कहे ब्रह्म गुलाल सुनो मथुरामल्ल, कह अभिलाष विषय को रहा ॥१०॥

पूर्व पक्ष—ऐसे कें जोगु खरौ कै दिढ़ावत, भोग ऐसो कहा प्रलयो है,
मो पै सुनो करतूति दुनाहु की, कौन सुभाव महा निर्मलो है?
वा परिणाम रहें पर आश्रित, या परिणाम जुदे वें किलो हैं,
मल्ल कहै सुनि ब्रह्म गुलाल, जती सूं कछू जु गृहस्थ भलो है ॥११॥

उत्तर पक्ष—जती सूं कछू जु गृहस्थ भलौ है, तो राजनि राज तज्यो क्यों अयाने,
कप्पड़ कंचन कामिनि कुंजर, घोर परिग्रह तजे छिन माने।
मोती पदारथ लाल चुनी जरबाब जरा उपजै छिन मानें,
ब्रह्म गुलाल कहै मथुरा सुनि, तो सो गरीबु कहा तजि जानें ॥१२॥

पूर्व पक्ष—अबै न गरीबु, तबै न गरीबु, जबै घरु छांडि के मांगतु डोलै,
जाइ गृहस्थ के बार खरो नित, पेटु भरौ अक्षय निधि बोलै।
लेन न देन, न द्रव्य न अंबर, संख भये न रहै सुख मोलै,
मल्ल कहै सुनि ब्रह्म गुलाल पै, कौन हमारे फिरै अब तोलै ॥१३॥

उत्तर पक्ष जती को प्रताप कह्यो नहिं जाय, जिते नर-नाथ, तिते सब हीना,
इन्द्र नरेन्द्र फणीन्द्र नमैं कर जोड़ि, चरण मुख होत हैं लीना।
जिनको दिये दान लहें सुख स्वर्गनि सुन्दर देह महा परवीना,
ब्रह्म गुलाल कहै मथुरा सुनि, सोई जतित्व धरो भव छीना ।१४॥

पूर्व पक्ष—ऐसो जतित्व धरें हम हीं जु, गृहस्थ को धर्म कहा गत जानों,
औषधि दान, अहार घटावै, करै षट्कर्म दया धर्म मानों।
बचै पर द्रव्य रू नारि विरानी, निशा तजि जी मे पीवै जल छानों,
मल्ल कहै सुनि ब्रह्मगुलाल, गृहस्थ को धर्म जगत्रय बखानों ॥१५॥

उत्तर पक्ष—करै षट्कर्म दयाधर्म पालै, धरै व्रतशील, भलौ जन सोई,
दान विना पर को उपकार प्रतीत, गहै करणी नित नोई।
तीरथ जग्य विधान कीरंतन, पुण्य निमित्त करै सबु कोई,
ब्रह्म गुलाल कहै सुनि मल्ल, जतित्व विना पर मोक्ष न होई ॥१६॥

पूर्व पक्ष—पाग समारि कै खोर करो, सिर बागौ बन्यौ सु दिगम्बर ही,
धरौ व्रतशील कि भोग करो, घर छांडि चलो कि रहो घर ही।
सराग सुनो कि उदास रहो, कै रहो कोउ केइ विचार सही,
कहै मल्ल, गुलाल कहा करिये, कछु पंचम काल में मोक्ष नहीं ॥१७॥

उत्तर पक्ष- पंचम काल न मोक्ष कही, इत पालि अणुव्रत जाइ विदेहां,
संहनन क्षेत्र मिलै भव भाव, जु काल चतुर्थ सदा रहे जेहां।
कारण पायकें होय दिगम्बर, कर्मनि खेह करो तप येहां,
ब्रह्म गुलाल कहै मथुरा सुनि, जिन मत मोक्ष बतायो तहां ॥१८॥

पूर्व पक्ष—जन्महिं तें तप लेहिं महाजन, काल विशेष रह्यो नहिं ऐसो,
आवत जात जोई दिन आगिलौ, सो घटती मैं घटै तनु वैसो।
संजमु तें परिणाम खिसैं, पल आकुल-व्याकुल बालकु जैसो,
मल्ल कहै सुनि ब्रह्म गुलाल, पै पंचम कालु पलै व्रतु ऐसो ॥१९॥

उत्तर पक्ष—पंचम कालु कहा करै कातरु, जीव जहां बल आप संभालै,
काहसु कालहिं खोटि लगावै, जती तप सूर महाव्रत पालै।
संसृति देह तजै सब भोग, उदास रहै, सब स्वाद निवारै,
ब्रह्म गुलाल कहै मथुरा सुनि, ऐसो जतित्व ले पार उतारै ॥२०॥

पूर्व पक्ष—महाव्रत दुर्धर क्यों प्रतिपालत, स्फाटिक देह सहै न परीसा,
शीत कैं शीतल, धूप तपंत, क्षुधा कै तृषा किं पर लें न तितीसा।
छीन परै, न सहाउ करै, छिनु ध्यान टरैं परमारथ ईसा,
मल्ल कहै सुनि ब्रह्म गुलाल, खसे व्रत के गुण जाइं छत्तीसा ॥२१॥

उत्तर पक्ष—बहिरूं मुख भूल करै अति कष्टु, निवृत्ति समान खरौ व्रत ध्यानी,
डगुले न कहूँ मन संजम तें, परिणाम विचारि रहै निज प्रानी।
व्रत तें तपतें जपतें गुणतें जु टले, नहिं टेक रु सुन्दर बानी,
ब्रह्म गुलाल कहै मथुरा सुनि, दौर चलै न परै गिरि पानी ॥२२॥

पूर्व पक्ष—उदयागत आय झकोर करै, तो कहा है गृहस्थ, कहा ब्रह्मचारी,
कछु तें जु कछू परिणामु टरै, डगुले न कहूँ व्रत जाइ संभारी,
जाइ कलेसु विषाद कियो जु, दीपायन सो जु महाव्रत धारी,
मल्ल कहै सुनि ब्रह्म गुलाल, लिखि विधि रेख टरै नहिं टारी ॥२३॥

उत्तर पक्ष—धर्म किये तें जु होय बुरो, तो बुरो इ भयें फिर धर्महिं ध्यावै,
जीव के पोतें शुभाशुभ संचित, एकु नहीं पुनि एकु सतावै।
कमनि के नि संहारि गये पुनि, तुर्त अनन्त महाबल पावै,
कातर काइलु कमे थये सुन मल्ल, गुलाल कहा समुझावै ॥२४॥

सम्बोधन—कारजु सिद्धि है कारण तें, विनु कारण काजु होय न काऊ,
ज्यों दधि मैं जु मिल्यो घृततत्त्व, बिना मथिये कहौ कसे कै पाऊं।
ऐसो जानि करो तप कारण, कारज को सोउ होइ सहाऊ,
ढील करो जनि, मल्ल धरो व्रत, ब्रह्म गुलाल कहै गुणराऊ ॥२५॥

दोहा—गंधा रस परसन विषय, इनतें भयो निसल्ल।
गुलाल ब्रह्म उपदेश तें, ब्रह्मचर्य लियो मल्ल ॥२६॥★